प्राक्कथन

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य में मानवी जीवन का हू - ब - हू चित्रण दिखाई देता है। साहित्यकार की कोशिश ज्यादातर समाज जीवन का यथार्थ चित्रण करने की रहती है। इस तरह समाज की छोटी-मोटी हर घटना का चित्रण उपन्यास साहित्य में होता है।

गोविंद मिश्र जी सृजनशील रचनाकार हैं। उनके उपन्यासों में समाज जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। अत: उन्होंने साहित्य की अन्य विधाओं में भी समाज का वर्णन किया है। उन्होंने अपने अनुभवों को पाठकों के सामने रखा है। परिणाम स्वरूप उनकी हर रचना पाठक को अपनी ही कहानी लगती है। इस तरह उनका साहित्य रोचकता की कगार तक पहुँचा है।

मिश्र जी सजग रचनाकार होने के कारण उन्होंने समाज के हर वर्ग के सुख-दुख को उपन्यासों में चित्रित किया है जैसे - आज़ादी के लिए संघर्ष, उच्च वर्ग द्वारा अन्य वर्गों का शोषण,भुखमरी, पुलिस तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा अन्याय / अत्याचार, अर्थाभाव से ग्रस्त शहरी तथा ग्रामीण लोग, राजनेता की कूटनीति से भ्रष्ट बनी राजनीतिक शासन प्रणाली, संस्कृति को महत्त्व देने वाले लोग और उनका उत्साह आदि। अत: इस पीड़ित समाज को उसके सांस्कृतिक जीवन के साथ मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

अनुसंधान करने की इच्छा के कारण वह अपना चेहरा, लाल पीली जमीन, तुम्हारी रोशनी में, पाँच आँगनोवाला घर आदि उपन्यासों में चित्रित समाज के संघर्षशील तथा संस्कृति प्रिय जीवन से मैं प्रभावित होने के कारण मिश्र जी के उपन्यास साहित्य के प्रति मेरी रूचि बढ़ती गई और उनके उपन्यासों पर अनुसंधान करने का निश्चय किया।

संपन्न कार्य :-

आज तक मिश्र जी के साहित्य पर निम्नांकित शोध कार्य हुआ है -

(1) एम्.फिल.

(1) गोविंद मिश्र का उपन्यास लाल पीली जमीन : एक अनुशीलन,
प्रा.मायाप्पा आक्कापा यल्लुरे (शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, अप्रैल, 1997)

(2) गोविंद मिश्र की कहानियों में सामाजिकता,
इंद्रजीत राठोड (पूना विश्वविद्यालय, पूना, सन् 1985 ई.)

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि, 'गोविंद मिश्र जी के उपन्यास साहित्य में से 'समाज जीवन' शीर्षक पर किसी ने भी अनुसंधान कार्य नहीं किया है। अत: शोध-निर्देशक डॉ.निकम जी से सलाह-मशवरा कर "गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन" इस विषय पर अनुसंधान कार्य करने की बात मैंने ठान ली।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नांकित सवाल उठे।

1. क्या, मिश्र जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर असर दिखाई देता है ?
2. क्या, मिश्र जी समस्यामूलक लेखक है ?
3. क्या, मिश्र जी विवेच्य उपन्यासों में समाज का पूर्णत: चित्रण करने में सफल हुए हैं ?

अध्ययन के उपरांत इन सभी सवालों के जो भी उत्तर मुझे प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में दर्ज किए हैं।

अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने लघु शोध-प्रबंध का निम्नलिखित अध्यायों में विभाजन किया है।

प्रथम अध्याय : गोविंद मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

इस अध्याय में मिश्र जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत मिश्र जी का जन्म, माता-पिता, शिक्षा, विवाह, नौकरी, साहित्य के प्रति अनुराग, साहित्यकारों का साथ, प्रेरणा, रूचि आदि पहलुओं के द्वारा स्पष्टीकरण दिया है। कृतित्व के अंतर्गत उनकी विभिन्न विधाओं में लिखी रचनाओं का परिचय दिया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय : समाज जीवन : परिभाषा, स्वरूप एवं विशेषताएँ ।

इस अध्याय में समाज का अर्थ एवं परिभाषा, स्वरूप तथा महत्त्व, समाज का वर्गीकरण आदि का सैद्धांतिक विवेचन प्रस्तुत किया है। समाज की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थिति एवं समस्या के साथ समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का भी विवेचन प्रस्तुत किया है। अंत में निष्कर्ष दर्ज किया है।

तृतीय अध्याय : गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन ।

इस अध्याय में मिश्र जी के उपन्यासों में चित्रित समाज में मिलनेवाली सभी बातों का विवेचन किया है जैसे - समाज के तीनों वर्ग, अज्ञानी एवं परंपरा प्रिय समाज, जातीयता, अन्याय / अत्याचार, शिक्षा, शोषण, अर्थाभाव, स्वतंत्रता आंदोलन, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, व्यसनाधीनता, युवा वर्ग, विदेशी प्रभाव, आधुनिक साधनों का आकर्षण, संस्कृति, विवाह के प्रकार, विवाह- विच्छेद, परिवार संस्था, स्त्री-पुरूष संबंध आदि पहलुओं के आधार पर समाज जीवन को चित्रित किया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय : गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन की समस्याएँ ।

इस अध्याय में मिश्र जी के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन की समस्याओं में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मन वैज्ञानिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है और अंत में जो भी तथ्य सामने आए हैं उन्हें निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय : गोविंद मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन की विशेषताएँ ।

इस अध्याय में मिश्र जी के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन की विशेषताओं के अंतर्गत संयुक्त परिवार, देशप्रेमी, संस्कृति प्रिय, विद्रोही समाज, आत्मनिर्भर साहसी नारी, महत्त्वाकांक्षी युवा वर्ग, समलिंगी आकर्षण, वात्सल्यमयी, कलाप्रेमी वेश्या आदि का विस्तार से विवेचन दिया है। और अंत में जो भी तथ्य सामने आए हैं उन्हें निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया है।

उपसंहार :

उपर्युक्त सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रूप में उपसंहार में प्रस्तुत किया है तथा प्राक्कथन में उठाए गए सवालों के जबाब अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में प्रस्तुत किए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

परिशिष्ट :

ऋणनिर्देश

इस लघु शोध-प्रबंध के लिए अप्रत्यक्ष रूप में मेरे गुरू ने मुझे प्रेरणा दी है। श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.शिवाजी निकम जी के बहुमोल निर्देशन की ही यह फलश्रुति है। मैं उनके सहयोग से ही मेरा लघु शोध-प्रबंध पूरा कर पाई। मैं उनकी सदैव ऋणी रहूँगी।

श्रद्धेय गोविंद मिश्र जी और डॉ.उर्मिला शिरीष का इस कार्य में योगदान रहा है। निरंतर डाक द्वारा उन्होंने सामग्री भेजकर मुझे सहयोग दिया। अत: मैं उनकी आभारी हूँ।

श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.वसंत मोरे, डॉ.पांडुरंग पाटील, डॉ.अर्जुन चव्हाण, डॉ.माळी, डॉ.धुमाळ, प्रा.इंगवले, प्रा.आवटे, प्रा.बी.डी. कदम, डॉ.अनिल साळुंखे आदि के समय-समय पर मार्गदर्शन से ही मैं अपना लघु शोध-प्रबंध पूरा कर सकी हूँ। इन सभी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्णता में मेरे माता-पिता तथा बड़ी बहन और उसकी बेटी सायली राजहंस सभी बराबर के हिस्सेदार हैं। जिन्होंने मुझे पारिवारिक चिंताओं से दूर रखकर हर समय सहयोग दिया। इनके ऋण में ही रहना मैं पसंद करती हूँ। साथ ही मेरे जिजाजी और उनके माता-पिता की मैं ऋणी हूँ क्योंकि, उन्होंने मेरी पारिवारिक कठिनाइयों को हमेशा जाना है। इन सभी की मैं आभारी हूँ।

इस अवसर पर मेरे मित्र परिवार के सदस्य श्री.किशोर पाटील और कु.अनघा तोडकरी ने मेरी हमेशा सहायता कर, मेरी हर जिद पूरी कर मेरे अनुसंधान कार्य को गतिशील बनाए रखा और साथ ही कठिनाइयों का सामना करने के लिए मुझे प्रेरित किया। इनके निरंतन प्रोत्साहन तथा प्रेरणा से मैं अपना लघु शोध-प्रबंध पूरा करने में सफल रही हूँ। साथ ही शकुंतला गायकवाड, प्रा.नंदिनी गंधे, मिलन मस्करेंज, संगीता नाईक, वैशाली सुतार, हनुमंत शेवाळे, सौदागर साळुंखे, अशोक बाचूळकर, गिरिश काशीद, अनिल साळोखे, रमेश कांबळे (मामा), अर्जुन नलवडे, शेखर इंजल आदि की सदिच्छा से ही मेरा यह कार्य संपन्न हुआ। इन सभी की मैं आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक पुस्तकें शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय से प्राप्त हुई हैं। अत: ग्रंथपाल तथा कर्मचारियों के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

इस प्रबंध का आत्मीयता और तत्परता से सुचारू रूप में प्रबंध का टंकन-लेखन करने वाले रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री.मुकुंद ढवळे और उनके सहायक श्री.राजू कुलकर्णी जी ने शिघ्रता से किया है। मैं उनकी आभारी हूँ।

अंत में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में मदद करनेवाले सभी आप्तजनों, गुरूजनों, सहृदयों तथा हितचिंतकों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

कु.मनिषा जाधव

कराड